No. of Printed Pages : 4

MHD-15

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि एम. ए. (हिन्दी)

(एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2022

एम. एच. डी.-15 : हिन्दी उपन्यास-2

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं* ***तीन*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2×10=20

(क) सदा ही ऐसा हुआ है। संत अपने जीवन में गरीबों के होते हैं। मृत्यु के बाद अमीर उन्हें छीन लेते हैं। भगवान बुद्ध भिक्षा-वृत्ति से जीवन बिताते थे।

उनके निर्वाण के बाद राजा, उनके प्रचारक और प्रतिनिधि बन गये। ईसा के साथ भी यही हुआ। वही इस संत के साथ हो रहा है। कल यह लोग ताजमहल की लागत का एक गांधी स्मारक बना देंगे और गांधी जी के सिद्धान्तों को उस महल की नीव में दबा देंगे।

(ख) काशीराम, तुम निर्लेप फकीर हो। मैं दुनियादार। तुम्हारी दया-रहम वाली वृत्ति को क्यों बदलूँ। सौ-पचास पर लकीर मार भी दोगे तो उसके भंडारे में कमी न आएगी। फिर शास्त्र-मर्यादा कहती है—दान से आता है, जाता नहीं।

(ग) टेकनीक! हाँ टेकनीक पर ज्यादा जोर वही देता है, जो कहीं न कहीं अपरिपक्व होता है, जो अभ्यास कर रहा है, जिसे उचित माध्यम नहीं मिल पाया। लेकिन फिर भी टेकनीक पर ध्यान देना बहुत स्वस्थ प्रवृत्ति है बशर्ते वह अनुपात से अधिक न हो जाये।

(घ) तुम मंझोली हैसियत के मनुष्य हो और मनुष्यता की कीचड़ में फँस गये हो। तुम्हारे चारों ओर कीचड़ ही कीचड़ है। कीचड़ की चापलूसी मत करो। इस मुगालते में न रहो कि कीचड़ से कमल पैदा होता है। कीचड़ में कीचड़ ही पनपता है। वही फैलता है, वही उछालता है।

2. 'राग दरबारी' में चित्रित यथार्थ में निहित व्यंग्य शैली का विवेचन कीजिए। 10

3. स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के सन्दर्भ में 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का मूल्यांकन कीजिए। 10

4. 'जिन्दगीनामा' उपन्यास की अन्तर्वस्तु और शिल्प का विवेचन कीजिए। 10

5. औपन्यासिक महाकाव्य के रूप में 'झूठा-सच' का मूल्यांकन कीजिए। 10

6. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×5=10

(क) देश का विभाजन और 'झूठा सच'

(ख) 'जिन्दगीनामा' का भाषिक सौन्दर्य

(ग) 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश

(घ) 'राग दरबारी' का सामाजिक यथार्थ